इला रानी सिंह

प्रेम
एक कविता

लेखक
श्री प्रवीर मुखोपाध्याय

अनुवादिका
इला रानी सिंह

मैथिली रंगमंच

प्रथम संस्करण :
जनवरी, १९६८ ई०
द्वितीय संस्करण :
जून, १९७४ ई०

प्रकाशक :
मैथिली रंगमंच
१६२/ए/८५, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-४५

मुद्रक :
सिंह प्रेस,
कलकत्ता-४५

मूल्य :
एक टाका

आमुख

श्री प्रवीर मुखोपाध्याय नाट्यकार एवं नाट्य - निर्देशक क रूप मे प्रख्यात छथि। आरम्भहि सँ कलकत्ता क मैथिली नाट्यान्दोलन कें सक्रियता, गतिशीलता तथा नव आलोक प्रदान करबा मे प्रवीर बाबू क सहयोग अन्यतम रहल छन्हि। कलकत्ता मे मैथिलीक प्रथम नाटकाभिनय हिनकहि निर्देशन मे भेल छल। ई हिनकहि सत्प्रेरणा तथा मार्ग-निर्देशन क फल थीक जे आइ मैथिली रंगमंच एत्तेक विकसित भ' सकल अछि। हाथी क दाँत, चोर, कांचन रंग, सुखायल डारि नव पल्लव, कुहेस, निष्प्रदीप, अन्हेर नगरी, एक छल राजा आदि नाटक कें जतबाक जनप्रियता प्राप्त भ' सकलैक ताहि मे हिनकहि अवदान सर्वाधिक मानल जा सकैत छन्हि। जौं कहियो मैथिली नाटक क सुव्यवस्थित और सत्य इतिहास लिखल जाय त प्रवीर बाबू क नाम ओहि मे स्वर्णाक्षर सँ लिखल जेतन्हि।

इला रानी क एहि अनुवाद द्वारा प्रवीर बाबू क कृति क आस्वाद मैथिली पाठकहुँ कें प्राप्त भ' सकन्हि, इयैह मैथिली रंगमंच क संचालक लोकनिक कामना छन्हि। हम रंगमंच क एहि प्रयास कें प्रशंसनीय बुझैत छियन्हि।

—प्रबोध नारायण सिंह

पुरुष पात्र

मनोज

अश्रु

स्त्री पात्र

सीमा

प्रथम अभिनय रजनी

नेताजी सुभाष इन्स्टिट्यूट, कलकत्ता

४ दिसबर, १९६६ ई०

मनोज—श्री श्रीकान्त मण्डल

अश्रु—श्री रामलोचन ठाकुर

सीमा—कुमारी चन्द्रकला

प्रेम : एक कविता

[एक टा मेसक एक घर। घरक एक कात मे एकटा चौकी। ताहि पर चादरि और तकिया। देवाल मे सटाओल एकटा छोट सन साधारण टेबुल और कुर्सी। टेबुल पर किछु पोथी और किछु छोट-छीन वस्तु सब राखल छैक। टेबुलक ऊपरक देवाल पर रवीन्द्रनाथक फोटो टाँगल छैन्ह। मनोज चौकी पर लेटि कए कविता लिखि रहल अछि और बीच-बीच मे गुनगुना रहल अछि। सीमा नामक एक लावण्यमयी सुन्दरी कन्याक प्रवेश।]

सीमा—कविता लिखैत छी की ?

मनोज—[चौंकि कए]—नहि !

सीमा—तखन देन ह्वाइ आर यू ब्रड़ब्रडिंग एलोन ? तखन की, खिस्सा ?

मनोज—आउ, बैसू !

सीमा—ऐलहुँ जखन तखन बैसबे करब।

मनोज—आइ एतेक साज-शृङ्गार कियैक ?

सीमा—एकटा न्योत अछि; ओतहि जायब। बगलक चौकी खाली कियैक छैक ?

मनोज—ओ सज्जन चलि गेलाह।

सीमा—तकर माने जे आइ सँ अहाँ एसगरे रहब ?

मनोज—बताहि नहि तन, कलकत्ता मे सीटो [जगहो] खाली रहैत छैक।

सीमा—से ठीके; कलकत्ताक मेसक सीट खाली नहि रहैत छैक।

मनोज—एखन अश्रु रहला सँ कहतिहैक जे खाली मेसक सीटक लेल के झखै; ट्राम-बस, एतबा धरि कि कलकत्ताक कन्या सभक मनो केर सीट खाली नहि रहैत अछि।

सीमा—इह, अश्रु रहला सँ बजितथि—अपन मनक गप्प अश्रु बाबूक नाम सँ कहि लेलहुँ ; नै ?

मनोज—अच्छा बेस ! अश्रु अबितहि हेतैक; ओकरे पुछबैक !

सीमा—अश्रु बाबू औताह की ?

मनोज—हँ !

सीमा—हठात् कियैक ?

मनोज—हठात् नहि। फोन केने रहियैक; मुदा ओ त ऑफिसे ल' कए व्यस्त अछि।

सीमा—फोन कियैक केलियन्हि हुनका ?

मनोज—काज अछि।

सीमा—अच्छा छोड़ू। की क' रहल छी ?

मनोज—गप्प क' रहल छी - अहाँक संग।

सीमा—भेलै; आब काव्य रचनाक काज नहि छैक !

मनोज—अहाँक और हमर परिचये त एक टा काव्य थिक—ओ वर्षा, ऑफिसक समय, ट्राम, और तीतल-भीजल आहाँ।

सीमा—और अहाँ सुखायल चेरा ! नै ?

मनोज—न ; हमहूँ भीजल रही। भीड़ मे ट्रामक खिड़की लग हम लटकि रहल छलहुँ। अहाँ कें कंडक्टर और हम—दुनू गोटे कहलहुँ……

सीमा—लेडीज सीट नहि छैक; पछिला ट्राम सँ आबू।

मनोज—अहाँ कहलियैक हम ठाढ़े भ' कए जायब। हँट्ठ; हमरा भीतर जाय दियह।

सीमा—अहाँ उतरि कए ठाढ़ भ' गेलहुँ और हम चढ़लहुँ।

मनोज—और ट्राम खुजि गेलैक।

सीमा—और अहाँ नहि चढ़ि सकलहुँ।

[दुनू हँसै लगैत अछि।]

सीमा—ई भेल अहाँक काव्यक प्रथम सर्ग।

मनोज—द्वितीय सर्ग………

सीमा—डलहौसी क ओहि कम्पनी क इंटरव्यू रूम !

मनोज—हम और अहाँ दुनू गोटे इंटरव्यू देमै गेल छलहुँ।

सीमा—अहाँ आश्चर्य चकित भ' कए हमरा दिस देखै लागलहुँ और बाजलहुँ अहाँ कें भरिसक कतहु देखने छी।

मनोज—अहाँ बाजलहुँ "नहि, मन तँ नहि पड़ि रहल अछि।"

सीमा—आइ एकटा गप्प कही ? हम लेकिन अहाँ कें चीन्हि गेल छलहुँ।

मनोज—ओ हम अहाँक आँखिये देखि कए बूझि गेल छलहुँ।

सीमा—काव्यक तृतीय सर्ग भेल धर्मतल्लाक सेल्फ सरविस रेस्टूरेंट।

मनोज—अहाँ एक हाथ मे चाहक पियाली और दोसर हाथ मे पकौड़ी आनि, देखलहुँ जे अहाँक सीट पर हम बैसल छी। अहाँ पहिने किंचित तमसा कए तदुपरान्त चारू दिस नीक जकाँ देखि कए हमरा दिस करुण-दृष्टि सँ तकलहुँ……

सीमा—और अहाँ तखनहि बाजि उठलहुँ, "अरे अहाँ! की समाचार ?"

मनोज—और उत्तर की भेटल ! "हम अहाँ कें चिन्हलहुँ नहि।"

[दुनू गोटे हँसै लगैत छथि]

मनोज—अंतिम सर्ग बड़ रसमय छैक। अश्रु सँ भेंट करै गेल छलहुँ। ओतय जा' कए देखलहुँ अहाँ ओकर कंटिरबी कें ओ ना मा सी धं पढ़ा रहल छी।

सीमा—और अहाँ झट द' बाजि उठलहुँ; आब अहाँ जरूर हमरा चिन्हि रहल छी। अहाँक छात्रक पिताक हम मित्र थिकहुँ—अत्यन्त घनिष्ठ मित्र थिकहुँ। हमर बात पर अहाँक काज रहियो सकैत अछि ओर जाइयो सकैत अछि।

मनोज—अहाँ किछु काल अपन ठोर दाँत सँ दाबि कए हमरा दिसि ताकैत रहलहुँ और तकर बादे अहाँक आँखि मे नोर भरि गेल।

सीमा—सत्ये, ओहि दिन हम बड़ भयभीत भ' गेल छलहुँ। एकटा नौकरी क आस सँ कतेक दौड़ादौड़ी कैलाक बाद ई साठि टाकाक ट्यूशन

भेटल छल। ओहि दिनक एके दिन पूर्व माइक हाथ मे सब टाका थम्हा देने छलियैक और घर मे ओहि दिन सभक मुँह मे कनेक हासक प्रकाश देखने छलहुँ। सेहो काज छुटि जायत। ई सोचि कए अपना कें सम्हारि नहि सकलहुँ।

मनोज—ई की ? फेर आँखि कियैक भरि रहल अछि ?

सीमा—कतय ? नहि त।

मनोज—फेर फूसि बजैत छी ? नोर पोछू !

सीमा—धुत्, अँहूँ त एकटा…… [आँचर सँ नोर पोछैत अछि।]

मनोज—हँ, हम एक टा खराब लोक थिकहुँ।

सीमा—अहाँ कें हम हजारो बेर कहने हैब जे 'खराब लोक, खराब लोक" हमरा लग जूनि बाजू, मुदा अहाँ त ……

मनोज—खराब नहि त की छी ? कतय अश्रुक गृहिणी होइतहुँ, होइतहुँ गीताक माय ! से नहि भेल, आ' हम अभागल अहाँ कें सब सम्पत्ति सँ वंचित क' देलहुँ।

सीमा—नीक भेल। हमर बोझ अश्रु बाबूक कान्ह पर उतारि कए भागवाक चेष्टा कैने छलहुँ; आब ओ भार अपनहि कान्ह पर ल कए उगहै पड़त।

मनोज—हमर चिट्ठी आनलहुँ अछि ?

सीमा—हँ, हे इयेह ! की लिखलियैक अछि से कनेक कहू त ! ताहि पर पढबो मना, बात की थिकैक ? अहाँक माथ मे की घुरघुरा पैसल अछि !

मनोज—घुरघुरा माथ मे नहि, छाती मे अछि।

सीमा—से केहन घुरघुरा ?

मनोज—ओ प्रेम क घुरघुरा थिक !

सीमा—ठट्ठा क' रहल छी ?

मनोज—ठट्ठा हम क' रहल छी कि अहाँ ?

सीमा—से कोना ?

मनोज—और नहि त की ? हम अश्रुक मायक दिस सँ घटकैती करै अहाँक ओहि ठाम गेलहुँ और अहाँक बाबूजी राजी भ' गेलाह, मुदा अहाँ

जा कए झट द' अश्रु कें कहि एलियैक जे "हम मनोज बाबू सँ प्रेम करैत छी।"

सीमा—अहाँ तखन हमरा एको रत्ती नहि सोहाइत छलहुँ।

मनोज—ओ त नीके छल। तखन दुनू आँखि दुरुस्त छल त..........?

सीमा—ओह! नहि जानि अहाँ ओहि दिन कतेक तमसायल छलहुँ!

मनोज—सत्ये; अश्रु सँ सब बात सुनितहि एकदम अवाक भ' गेल छलहुँ। आनन्द जे एको मिसिया नहि भेल से कोना कहू! सोचलहुँ हाय रे, कलिकालक बेकार युवक! धन विद्या, रूपक अभावहु मे तोरा सँ नारी प्रेम करैत छौक! तकर बाद तामस भेल; प्रचण्ड तामस!

सीमा—दनदना कए आबि कए हुकुम देल "सीमा देवी, गीता कें पढ़ौलाक पश्चात् हमरा सँ चौराहाक मोड़ पर भेंट करब। हम ओतहि प्रतीक्षा करब!

मनोज—तकर बाद विक्टोरिया मे बैसि कए जे आहाँ सँ सुनलहुँ ....!

सीमा—ओहि दिन जे कहने छलहुँ से ध्रुव सत्य। पैघ घर मे नीक जकाँ बियाह हो, ई भेल कन्या सभक चिरंतन अभिलाषा; मुदा हमरा लेल तखन से संभव नहि छल। हम सब एतेक भाय-बहिन छी! बहिन क बियाह त भ' गेलैक, किन्तु ताहि लेल ओ एकमहला मकान बन्हकी लगाओल गेल छैक। कोनो भाय पैघ नहि अछि। बाबूजी समाचार-पत्र क ऑफिस मे काज करैत छथि; ओहि सँ भेंटते कतेक छन्हि? बियाह भ' गेला पर हमरा सासुर सँ काज करबाक अनुमति किन्नहु नहि भेटति। साठि टाका मास अश्रु बाबूक ओहि ठाम सँ भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त और तीन स्थान सँ १२० टाका भेटैत अछि। ई १८० टाका एहि विशाल परिवार लेल किछु नहि छैक; तथापि किछु भार त हल्लुक होइत छैक। छोट भाय-बहिन तथा माय-बापक प्रति हमर किछु दायित्व और कर्त्तव्य सेहो अछि।

मनोज—से त हम अस्वीकार नहि क' रहल छी ने ? मुदा हमरा पर झूठ आरोप कियैक केलहुँ ?

सीमा—हम थोड़बे दिन मे ई बूझि गेल छलहुँ जे अश्रु बाबू और अहाँ मे बहुत हेम-क्षेम अछि। अहाँ हुनका सभक परिवार क सदस्य जकाँ छी। ओ सब सम्पन्न रहितहुँ अहाँ सँ स्नेह और श्रद्धा करैत छथि, कियैक त अहाँ अपन आत्मा और संभ्रम कें कोनो प्रकारें, कोनो कारणें ककरो लग बेचबा लेल प्रस्तुत नहि रहैत छी ?

मनोज—बस-बस; भेल। एखन गप्प सब आन प्रकार क भ' रहल अछि। बेसी प्रशंसा भेला सँ हम अभिमानी भ' जा सकैत छी.......

सीमा—ओ अहंकार अहाँ कें शोभैत अछि। अश्रु बाबूक माइ हमरा नहि जानि कतेक दिन कहने हेतीह जे मनोज सन नीक संतान हम एकोटा नहि देखने छियैक। कोनो दिन, कोनो प्रकारक सहायता ओ ककरो सँ नहि लेतैक। ओ जँ एकहु बेर हमरा वा अश्रु कें मुँह खोलि कए कहतिहैक तखन ओकरा टाका वा काज क कि कोनो अभाव छलैक ? मुदा ओ त कहैत रहैत अछि; काकी, हम बैंकिंग अथवा चोरौका दरबज्जा सँ प्रवेश नहि पाबै चाहैत छी। जखन जेबाक शक्ति हैत तखन प्रधान दरबज्जा सँ सगर्व जायब।

मनोज—ओ सब गप्प रहै दियह; असल बात पर त आबिये नहि रहल छी !

सीमा—हम त सोचलहुँ जे हम जँ अहाँ क नाम लेब तखन ओ सब कोनो प्रकारें नहि अगुवैताह।

मनोज—और अश्रुओ तेहने बकलेल अछि जे अहाँ क बात झट द' पतिया लेलक।

सीमा—सत्ये, ओहन नीक लोक भेंटब कठिन। एतेक धनी भेलहुँ पर एको रत्ती अहंकार नहि छन्हि और प्रत्येक गंभीर वस्तु कें ओतेक सहज भावें क्यो नहि ग्रहण क' सकैत अछि।

मनोज—से सत्ये ! ओ.........

सीमा—हमरा मुहें ओ गप्प सुनितहि हँसैत-हँसैत बजलाह "आइ एम वेरी सॉरी" [हम बड़ दुःखी भेलहुँ] सीमा देवी ! हमर टारगेट गलत भ' गेल अछि। कलकत्ता क कन्या सभक मनक सीट खाली नहि रहैत छैक और विशेष रूपें हमरा सन विधुर तथा संतान क पिताक लेल। अहाँ ई सब बिसरि जाउ; नाउ वी आर फ्रेंड्स [आब हम सब मित्र भेलहुँ]। तँ हमर कन्या कें पढ़ैबाक भार अहाँ कें ग्रहण करै पड़त; नहि त हम बुझब जे वर्त्तमान समय मे तथा एहि धरती पर अहाँ चलबा योग्य नहि थिकहुँ। जीवन मे अहू सँ पैघ और अनेक समस्या आबि सकैत अछि। तखन त ओहि सब कें अहाँ एकदमे ग्रहण नहि क' सकब। ओही दिन सँ हमरा लेल ओ श्रद्धास्पद् भ' गेलाह।

मनोज—ऐं, बाप रौ बाप !

सीमा—की भेल ?

मनोज—अश्रु क बात सब तँ एकदमे कंठस्थ क' कए रखने छी। अँ—हँऽ··· हमरा लेल नो चांस [कोनो उमेद नहि] !

सीमा—फेर मसकरी शुरू भ' गेल ?·········

मनोज—अच्छा; ई बुझू जे·········

सीमा—नहि-नहि, अहाँ अनटेटल गप्प एकदम बाजबे जूनि करू।

मनोज—अरे, सुनू त·········

सीमा—[कान मे आंगुर द' कए] हम सुनबे नहि करब।

मनोज—अच्छा, नहि सुनू। किछु काज क बात बुझबाक छल।

सीमा—कोन काज क बात ?

मनोज—किछु नहि।

सीमा—भेल-भेल, बुझलहुँ; बाजू।

मनोज—न; नहि कहब।

सीमा—[हाथ पकड़ि कए] नहि, कहैइए टा पड़त।

मनोज—हाथ—ताथ पकड़ला सँ किछु नहि हैत······!

सीमा—तखन पैर पकड़ैत छी। [पैर धरबा लेल हाथ बढ़बैत अछि और मनोज पाछाँ हटि जाइछ।]

मनोज—की क' रहल छी ?

सीमा—तखन बाजू.........

मनोज—एखन कियैक सताबे एलहुँ ?

सीमा—ऊँह—सतौतन्हि नहि ! बड़ बुधियार ! चाहैत छथि जे हम एसगरे छटपटाबी और ई निश्चिन्त भए फौंफ काटथि।...बाजू !

मनोज—बाबूजी दिल्ली कहिआ जा रहल छथि ?

सीमा—चारि तारीख कें।

मनोज—अंहौं सब जायब ?

सीमा—किछु ठीक नहि छैक। बादो मे जा सकैत छी। जौं बाबूजी कें क्वाटर भेंट जेतन्हि तखन ई मकान भाड़ा लगा कए हम सब दिल्ली जायब।

मनोज—अँहौं ?

सीमा—कोनो ठीक नहि ! बाबूजी क कहनाइ छन्हि जे "आब तोरा काज करबाक प्रयोजन नहि।"

मनोज—जायब त जाउ ने !

सीमा—हमहूँ सैह सोचि रहल छी। ओतय गेला उत्तर एकटा दिल्लीक युवक कें पकड़ि कए ओकरा सँ बियाह करल जा सकैछ, जकरा पास प्रचुर धन, मकान और गाड़ी..... ......

मनोज—ताहि लेल ओतेक दूर जेबाक कोन प्रयोजन ? अशुए कें त सब किछु छैक। कही त ओकर दमित लालसा कें कनेक खोंचाड़ि कए उसका दियैक।

सीमा—तखन सँ अहाँ अश्रु अश्रु कियैक क' रहल छी; कहू त ?

मनोज—ई भेल हमर अति आनन्द क अश्रु सीमा, दुःख क अश्रु नहि। तखन हम खूब सुखी हैब।

सीमा—की सदिखन मसकरी करैत रहैत छी ! हमरा एहन रहसनाइ नीक नहि लगैत अछि।

मनोज—अश्रु हमरा सँ बहुत नीक अछि—विद्या, बुद्धि, रूप गुण और टाका—सब किछु मे।

सीमा—बन्द करू अपन ई प्रलाप। किछु नहि कहैत छी, तेँ अहाँक साहस दिन-दिन बढ़ले जायत अछि। असंख्य बेर कहलहुँ जे हम टाका, रूप और युनिवर्सिटीक उपाधि सँ बियाह नहि करब।

मनोज—(चिढ़बैत कहैत अछि) तखन केकरा सँ बियाह करब ? हमरा सँ ?

सीमा—बाप रे, आब लाज कें ताख पर राखि कए ओहो हमरे कहै पड़त ? बेस, तखन सुनू ! हम बियाह करब कवि गीतकार मनोज कुमार जी सँ। की ओ, हमर लाज तोड़ि कए अहाँ कें की लाभ भेल ? से कनेक कहू त ! किन्तु हमर लाज अहीं क सम्पत्ति थीक—जे रूचै सैह करू।

मनोज—नमस्कार !

सीमा—कियैक ? हठात् एहि दिन-दुपहर मे नमस्कार कियैक ?

मनोज—कियैक त गप्प करबा मे अहाँ हमर गुरुदेव निकललहुँ।

सीमा—गुरु नहि; गुरु-पछाड़ चेला।

मनोज—चेला की ? सनठीक चेला !

सीमा—हे, हम दुव्वरि छी; तेँ हमरा कबदाबू जुनि, से कहि दैत छी। ठीक छै; जाउ ने। एकटा निम्मन मोट-सोंट बुलाकीबाली कनियाँ ल' ने आनू गे।

मनोज—सैह करब।

सीमा—ओ हमरा जकाँ चुपचाप एतेक नहि सहत। एको रत्ती कुचालि देखला सँ पीठ पर चेला तोड़त।

मनोज—अहा, वह् क मारि बड़ मधुर होइत छैक।

सीमा—गे माय ! छीः !! छीः !!!

मनोज—कियैक ? किछु अनुचित बजलहुँ ?

सीमा—सुनू ; ई चिट्ठी पढ़ब।

मनोज—एखन नहि, जखन कहब तखन। अश्रु त एखनहु धरि नहि आयल

अछि। और एक बेर फोन करियैक ?

सीमा --अनेरे पन्द्रह टा पाइ खर्चा करला सँ लाभ की; ओ अवश्य औताह। अहाँ क बजौने अश्रु बाबू नहि औताह ; से कखन्हु भ' सकैछ ?

मनोज -सेहो ठीके, अश्रु ए हमर सर्वस्व थीक। वैह हमर एक मात्र प्रिय व्यक्ति थीक--सुख-दुःख सब समय ओ हमरा लग शक्ति बनि कए ठाढ़ रहैत अछि।

सीमा—की सोचि कए ई सब कहि रहल छी ; कहू त ?

मनोज—चः, अहाँ कें एकटा बात कहि कए निश्चिंत नहि रहल जा सकैछ। सब बात मे किछु ने किछु गलती निकालिये लैत छियैक।

सीमा—अहाँ दुअर्थी गप्प कियैक करैत छी ?

मनोज—ओ, हमर दोष थीक। हमरा सभक भाषा मे.........

सीमा—भेल -भेल। हे भाषाविद्, आब भाषा-तत्त्व पर भाषण देवाक काज नहि छैक। और हँ, आब कोनो फिजूलो गप्प जुनि करू। (मनोज एकटा सिगरेट निकालि कए पूछैत छैक)

मनोज—विथ योर काईंड परमिसन, योर हाइनेस। (जौं अहाँ क अनुमति भेंटै तखन एहि तुच्छ वस्तु कें शरण दियैक) ?

सीमा—नहि !

मनोज—एकटा। पेट अफरि रहल अछि। मन अकसक करैत अछि।

सीमा—कहलहुँ त नहि। ओतेक सिगरेट जुनि पीवू।

मनोज—ओतेक कतय ? भोर सँ त एकोटा नहि पीने छी। सत्ये कहैत छी, विश्वास करू।

(सीमा चारू कात तकैत अछि और चारि-पाँचटा सिगरेट क टुकड़ी बिछैत अछि। मनोज किंचित घबरा जाइत अछि। सीमा सिगरेट क टुकड़ी सब मनोज क सामने ल' कए बजैत अछि।)

सीमा—(मुंह दूसैत) भोर सँ एकोटा नहि पीने छी; विश्वास करू (सिगरेट फेकैत) फुसियाह कहांक नहि तन ?

मनोज—ओ सब हमर संगी (रूम-मेट) क थिकैक—काल्हि और आजुक

ध्वंसावशेष। ओहि मे हमर कोनो हाथ नहि अछि।

सीमा—और ओ बीड़ी क टुकड़ी सब ?

मनोज—ओ त बगल क घरक कैलाश बाबू क सम्पत्ति थिक। बड़ बुधियारि छी! एकेटा पीबै दियह।

सीमा—वेस, एकटा पीबू, मुदा आइये टा; एकर बाद कहियो नाम जूनि लेब।

मनोज—अवश्य! अवश्य!!

[आराम सँ लैसैत सिगरेट क धुइयां सीमा क दिस छोड़ैत अछि।]

सीमा—हमरा मुँह पर नहि, ओहि दिस छोड़ि कए कृतार्थ करू।

मनोज—ओह, सारी! अच्छा सुनू, हम जा रहल छी।

सीमा—सुसमाचार, किन्तु कतय ?

मनोज—अहीं कहू त कतय ?

सीमा—निरुद्देश्य भावें त नहिये ने ?

मनोज—तेहने बुझू।

सीमा—हाय, तखन हमर की हैत ?

मनोज—हँसी जूनि बुझु; साँचे कहि रहल छी।

सीमा—सत्ये !!

मनोज—हँ।

सीमा—हठात् कोन दुःखें ?

मनोज—एहि ईंट-काठ सुर्खी क महानगर सँ मन अकच्छ भ' गेल अछि। तें किछु दिन एहि सँ मुक्ति चाहैत छी ?

सीमा—केकरा सँ मुक्त होमै चाहैत छी ?

मनोज—कलकत्ता मे आब नहि नीक लगैछ। बड़ पुरान भ' गेल छैक।

सीमा—(उठि कए टेबुल क पोथी सब उनटावै-पुनटावै लगैत छैक।) अद्भुत प्रकार क गप्प क' रहल छी। कोनो दिन कहबैक जे सीमा अहाँ बड़ पुरान भ' गेल छी।

मनोज—सेहो ठीके। अँहूं बड़ पुरान भ' गेल छी।

सीमा—(मुंहामुंही ठाढ़ भ' कए बजैत अछि।) इज इट (साँचे) ?

मनोज—येस इट इज (हँ साँचे), किन्तु डोंट टेक इट अदरवाइज (आन अर्थ मे जूनि लेब) अहाँ कें पूर्ण रूपें पैबाक लेल अहाँ क लग सँ किछु दुरहि जायब अनिवार्य। अहाँ जाउ अथवा हम जाय, किन्तु जायब नितान्त आवश्यक अछि। (सीमा मनोज क लग आबि जाइछ और एक-टक मनोज दिस तकैत अछि। मनोज म्लान हँसी हँसैत अछि।)

मनोज—की देखैत छियैक ?

सीमा—आर यू सीरियस ?

मनोज—निश्चय।

सीमा—अर्थात् स्वाद-परिवर्त्तन चाहैत छी ?

मनोज—नहि, बात से नहि छैक।

सीमा—(जोर दैत) बात जूनि बदलू। बात सैह छैक।

मनोज—ओतेक जोर द कए कियैक बाजि रहल छी ?

सीमा—कतय जाय चाहैत छी ?

मनोज—कार्शियंग!

सीमा—ओहिठाम की छैक ?

मनोज—छोट सन एकटा काजो भेटल अछि।

सीमा—कथीक काज ?

मनोज—एखन सब किछु अज्ञाते राखै चाहैत छी।

सीमा—[तमसा कए] हमरो सँ अज्ञात राखै चाहैत छी ?

मनोज—प्रत्येक परिचित सँ।

सीमा—हम की अहाँ क मात्र परिचिते टा छी ? इयैह की हमर परिचय थीक ?

मनोज—ताहि सँ ऊपर उठबाक चेष्टा त अहाँ कहियो कैनै नहि छी ?

सीमा—की ? की कहै चाहैत छी ?

मनोज—ककरा ?

सीमा—हमरा।

मनोज—किछु नहि।

सीमा—तखन एतेक देर सँ जे कहैत छलियैक से........?

मनोज—ओ सब सत्य थीक।

सीमा—हम अहाँक परिचिता थिकहुं; बस ऐतबे धरि ? आगाँ किछु नहि ?

मनोज—और नहि त की ?

सीमा—[गोसबैत-गोसबैत हँसै लगैत अछि] अहाँ जे छी...[दुलरैत] कनेको नहि सोहाबैत छी; हमरा सँ ओहि तरहें आब कहिओ नहि बाजब।

मनोज—नै-ने, हँसी जुनि बुझू...........

सीमा—हम जाइत छी।

मनोज—नहि जाउ, अश्रु कें आबै दियौक तखन...........

सीमा—अश्रु बाबू सँ हमरा कोन सम्बन्ध ?

मनोज—जाहि सँ एकटा सम्बन्ध भ' सकै तकरे प्रयास क' रहल छी।

सीमा—ताहि लेल अहाँक सहायताक प्रयोजन नहि छैक। प्रयोजन भेलो पर हम अपनहि सब किछु क' लेब।

मनोज—से अहाँ क' सकैत छी। [मनोज एहन निर्लिप्त भावें बजैत अछि जे सीमा क्रोधक आगि मे जरि उठैत अछि। बुझाइछ जेना क्यो सीमाक मुँह मखानक पात सँ खखोरि लेने होइक; ओ छटपटा उठैत अछि।]

सीमा—हँ, से क' सकैत छी। हम तँ थेथर थिकहुँ। अपनहि मुँहें बजने छलहुँ जे हम मनोज बाबू सँ प्रेम करैत छी।

मनोज—से हम नहि कहि रहल छी।

सीमा—सुजाता सँ भेंट भेल अछि की ?

मनोज—[अचानक क्रोधित भ' कए]—डोंट टॉक नान्सेंस।

सीमा—की भेल ?

मनोज—सॉरी ! किन्तु ई जुनि बिसरु जे सुजाता एखन आन क विवाहिता स्त्री छथि।

सीमा—अहाँक स्त्री कियैक नहि भेल ? [कुर्सी पर बैसैत अछि।]

मनोज—की बकलेल जकाँ बजैत छी ? हम अहाँ कें असंख्य बेर कहने छी जे ओकर चर्चा हमरा लग कहियो नहि करब। ओकरा हम बिसरि गेल छी।

सीमा—जकरा सँ प्रथम प्रेम कैल जाइत छैक तकरा बिसरब ओतेक सहज नहि ।

मनोज—[हँसि कए] एहन कोनो अनुभव अछि की ?

सीमा—अहाँ मे सैह देखैत छी ।

मनोज—हमरा मे ?

सीमा—हँ ।

मनोज—देखू सीमा, अहाँ सँ प्रेम क' कए अहाँ कें हम ठकै नहि चाहैत छी । तेँ आपन बिगत जीवनक सब किछु अहाँ कें कहलहुँ । हम स्वीकार करैत छी जे हम सुजाता सँ प्रेम करैत छलहुँ । किन्तु ओहि प्रेमक मर्यादा हमरा नहि भेटल । शायद दोषो हमरे थीक; हुनका दोष हम नहि देबन्हि, किन्तु आब हम हुनका बिसरि गेल छी । किन्तु तइयो अहाँ एके बात ल' कए हमरा बेर-बेर आघात पहुँचाबैत रहैत छी; कारण सरल मने, हम आपन दुर्बलताक संज्ञान अपनहि अहाँ कें द' देलहुँ, बिकौज, आइ ऐम ए ल; ए फर्स्ट क्लास फूल [कियैक तँ हम एकटा मूर्ख छी; परम मूर्ख] । जौं आन सब व्यक्ति जकाँ हमहुँ ओकरा नुका कए अहाँ कें ठकि सकितहुँ त भरिसक नीक होतिहै, मुदा प्रेमे क' कए हमर ई दुर्गति भेल ।

सीमा—[किंचित नरम भ' कए] मनोज बाबू !

[मनोज जबाब नहि दैत छैक] मनोज बाबू ! [पुनः मनोज उत्तर नहि दैत छैक] हमरा सँ नहि बाजब ?

मनोज—बाजू [सीमा मनोज लग आबैत अछि]

सीमा—विश्वास करू ! अहाँ कें आघात देबाक अभिप्राय सँ हम किछु नहि बजैत छी । अहाँ कें आघात देला सँ हमरा सब सँ बेसी आघात भेटत । हमरा क्षमा करू । हम आब कहियो ओ गप्प नहि उठायब। [कानै लगैत अछि] अहाँ विश्वास करु फेर कहियो एहि पापी मुँह सँ ओ सब नहि निकालब ।

[मनोज सीमा दिस तकैत अछि और सीमाक मुँह अपना दिस घुरबैत अछि । सीमा ओकर छाती पर माथ राखि कए कानै लगैत

अछि।]

मनोज--फेर आँखि से नोर कियैक आयल अछि ? नोर पोछू नोर। हम एको रत्ती दु:खी नहि भेल छी। साँचे कहैत छी। नहि कानी, नोर पोछू।

[सीमाक आँचर सँ मनोज नोर पोछि दैत छैक।]

सीमा—[हँसि कए] अहाँ त अश्रुक अपेक्षा क' रहल छलहुँ। से अश्रु त आयल। एखन आनन्द नहि हैत अछि ?

[अश्रुक प्रवेश]

अश्रु—यस, हम आबि गेल छी।

[सीमा और मनोज हँटैत अछि।]

अश्रु—ओ की थम्हू, हमही बाहर जो रहल छी। अहाँ सब तँ एहन-एहन कांड करैत छी जे.........

[ओ सब हटि जाइछ।]

मनोज—वी आर ओ के।

सीमा—ई की भ' रहल अछि ?

अश्रु—थैंक यू। की हौ मनोज कुमार, तोरा लेल की ओत ऑफिसोक काज धन्धा नहि देखि सकब ? और मोस्टरनी एखन एहि समय की क' रहल छथि ? रोज आबैत छथि की ?

मनोज—हँ, रोजे अबैत छथि। हम हुनका सँ पढ़ैत छी।

अश्रु—तों हुनका सँ पढ़ैत छह; त बेस। आ'सीमा देवी, ई अभागल कोन अपराध केने छल ?

सीमा—कथिक ?

अश्रु—मनोज त एखनहु पढ़ि रहल अछि। हम त जनैत छलहुं जे पढ़लक ई बहुत दिन पूर्वहि। ओहि दिन हमर प्रस्ताव स्वीकार कियैक नहि कैलहुँ ?

सीमा—गलती कैलहुँ।

अश्रु—स्वीकार क' रहल छी ?

सीमा—हँ !

अश्रु—कतेक नीक हेतिहै जे अहाँ हमरा "हे ये, हे औ" कहि कए बजेबितहौं और मनोज कें बाउ कहतिहन्हि। गीता अहाँ कें माय कहतिहथि। से नहि भेल; एखन मनोज मधुर सम्बोधन सँ सम्बोधित हैत और हम हैब बाउ।

सीमा—की करु ? गलती भ' गेल जे.........

मनोज—सुधारि लियह गलती; हम सब ठीक क' दैत छी।

अश्रु—तखन की छियैक ! सीमा देवी, वंह त ब्लॉक लेटर [बड़का अक्षर] मे "भ्रम-संशोधन" छथि ! आब कथीक चिंता ? [अश्रु एकटा सिगरेट जरा कए मनोज कें दैत छैक। मनोज सेहो सिगरेट धरबैत अछि। सीमा हँसै लागैत अछि।]

सीमा—देखियन्हु, कोना बुरबक जेकाँ टुकुर-टुकुर ताकि रहल छथि ?

अश्रु—अहीं छी एकटा.........

सीमा—कियैक ?

अश्रु—बुरबक जेकाँ नहि देखत त की चलाक चतुर जेकाँ देखत ?

मनोज—अहाँ दुनू गोटे मिलि कए हमरा अपमानित क' रहल छी ?

सीमा—ईस; छक द' लागि गेल की ?

[सीमा आगाँ बढ़ि कए मनोजक सिगरेट छीनि कए फेंक दैत अछि।]

मनोज—ई की ....ई

अश्रु—अच्छा, त आब ई कहू जे हमरा बजाओल कियैक गेल अछि ?

मनोज—प्रयोजन अछि।

अश्रु—कहू !

मनोज—हम शायद चलि जायब। अर्थात् बाहर जायब।

अश्रु—उत्तम प्रस्ताव। पुरुष क हर बखत घर मे सन्हिआयल रहनाइ नीक नहि।

मनोज—सेहो ठीके। ओकर अतिरिक्त अपना कं चिन्हबा लेल, जीवन कें जानबा लेल ई आवश्यक छैक।

अश्रु—[अवाक भ' कए मनोज कें देखैत] सीमा देवी, Am I dreaming ? हम की स्वप्न देखि रहल छी ? जागले छी ने ?

मनोज—हमर गप्पकें तों सब जौं हल्लुके क' कए बुझबह त हम की करी ? बाजह त।

अश्रु—तों सब माने ? ओ, सीमो देवी कें कहल गेल छैक ? [सीमा सँ] अहूँ गंभीरता पूर्वक ग्रहण नहि केलियैक ? त बुझिये रहल छह जे कतबो गंभीर भ' कए कहक ने कियैक, किन्तु तोरा मुँहें गंभीर बात एको रत्ती नहि शोभैत छह। तें जीवन कें जानबाक और अपना कें चिन्हबाक गप्प नहि बाजी सैह नीक। और ओकर अतिरिक्त कष्ट क' कए तोरा अपना कें जानबाक प्रयोजन नहि ! जिनका जानबाक चाही तिनकहि जानै दहक। तों बरन्........

मनोज—प्लीज स्टॉप [कृपा कए थम्हह] अश्रु.........

अश्रु—प्लीज स्टॉप कही चाहे मस्ट स्टॉप अर्थात् अनुरोध करी वा आदेश दी' किन्तु अश्रु कखनहु रुकि नहि सकैत अछि। ओ ओकर मर्जी थिकैक।

मनोज—हम सैह अश्रु त चाहैत छी।

अश्रु—अर्थात् ?

सीमा—सुनैत छियैक, कोना घुमा कए, ओझरा कए बजैत छथि ?

मनोज—ई ओझरायल गप्प नहि थीक सीमा ! ई हमर जीवन-मरणक प्रश्न थीक।

अश्रु—यत्न पूर्वक ओतेक गंभीर हैबाक चेष्टा कियैक क' रहल छह ?

मनोज—आइ तोरा कियैक बजौने छियह से जानै चाहैत छलह ने ?

अश्रु—हँ।

मनोज—सुजाता तोरा मनहु पड़ैत छह ?

अश्रु—सुजाता ? कोन सुजाता ?

मनोज—कॉलेजक संगिनी सुजाता।

अश्रु—ओह, कवि मनोज कुमारक भूतपूर्व प्रेमिका ? येस, मन पड़ैत अछि। सो चार्मिंग एण्ड ब्युटीफूल गर्ल [अतीव मोहक एवं सुन्दर कन्या] एखन त प्रदीप सिंहक घरनी छथि।

मनोज—हँ।

सीमा—फेर ओकर गप्प कियैक ?

मनोज—हमरा पास ओकर कैकटा फोटो छल। एक दिन ईडेन गार्डेन मे सीमाक सामने सबटा फोड़ि देलियैक।

अश्रु—नीके कैलह। एकटा फ्रेम मे दूटा फोटो राखबाक कोनो अर्थ नहि होइत छैक।

मनोज—ओहि दिन सीमा हमरा एकटा बात कहने छलीह।

अश्रु—की ?

मनोज—आन क्यो एला सँ ओहि दिन हमरो फोटो एहिना.........

सीमा—आइ ओ गप्प एहिठाम उठैत छैक कियैक ?

मनोज—किछुए दिन पूर्व हम हिनका कहने छलियन्हि जे हम अहाँ कें कहिओ बिसरि नहि सकैत छी ? कोना बिसरब ?

सीमा—हम कहैत छी अश्रु बाबू ! तेकर उत्तर मे हम कहने छलियन्हि जे जेना सुजाता कें बिसरि गेलियैक तहिना एक दिन हमरो बिसरि जायब, किन्तु हमर लाइटली [मजाक मे] कहल बात कें अहाँ मन मे पोसि रहल छी ! भीरु नहि तन !

मनोज—हँ-हँ हम भीरु छी, हम कावर्ड [कायर] छी। तँ त कहैत छी—चेंज योर वेज एण्ड लेट मी लिव एलोन [ओपन रस्ता बदलू आ' हमरा शान्ति सँ रहै दियह]।

अश्रु—एकटा बात पूछि सकैत छी, मनोज ?

मनोज—पूछह।

अश्रु—आर यू सीरियस ?

[मनोज आन दिस चलि जायत अछि।]

मनोज—एगेन दैट ईडियटिक क्वेश्चन [फेर सैह बुरबकी भरल प्रश्न] ! किछुए काल पहिने सीमो सैह प्रश्न केने छलीह। आइ एम टू सीरियस (हम खूब गंभीरता-पूर्वक बाजि रहल छी।)

अश्रु—एहन ठट्ठाक लेल धन्यवाद !

मनोज—(मनोज गोसा कए बजैत अछि) डोंट टॉक लाइक ए फूल (बुरबक जेकाँ बात जूनि करह)।

अश्रु—अरे, ई त गोसा गेल अछि।

सीमा—हँ, नहि जानि आइ हिनका की भेल छन्हि!

मनोज—अहाँक चिट्ठी कतय अछि?

सीमा—कियैक?

मनोज—दियह हमरा।

सीमा—कियेक?

मनोज—आह, जे कहैत छी से करू।

(सीमा चिट्ठी निकालि कए दैत छैक। मनोज चिट्ठी ल' कए अश्रु कें दैत छैक; मुदा अश्रु नहि लैत अछि।)

अश्रु—ओ की थिकैक?

मनोज—चिट्ठी!

अश्रु—केकर?

मनोज—सीमाक। हुनके लिखल गेल छन्हि।

अश्रु—के लिखने छैक?

मनोज—हम।

अश्रु—त हमरा किये द' रहल छह?

मनोज—पढ़ह।

अश्रु—तोहर चिट्ठी हम पढ़बह कियैक?

मनोज—हमही त पढ़ै कहि रहल छियह।

अश्रु—माने?

मनोज—पढ़ला उत्तर बुझि जैबह।

अश्रु—[किछु बुझबा मे असमर्थ भए सीमा सँ जिज्ञासा करैछ।] एहि मे की छैक?

सीमा—हम नहि जनैत छियैक। हम एखन धरि नहि पढ़लियैक अछि।

अश्रु—से कियेक?

सीमा—कालिह रातिखन चिट्ठी द' कए कहने छलाह जे डेरा जा'कए पढ़ब; बाद मे आपन शपथ द' कए कहलन्हि अखन रहै दियौक। कालिह हमरा एहिठाम आयब, तकर बाद पढ़ब।

अश्रु—तखन आपन चिट्ठी अपनहि पढ़ू।

सीमा—नहि' अहाँ कें जखन पढ़ै कहलन्हि अछि तखन अहीं पढ़ू।

अश्रु—(खौंझ जाइछ।) अहाँ कें पढ़बा मे असुविधे कोन भ' रहल अछि ?

सीमा—नहि-नहि ओहि चिट्ठी मे कोनो अमंगल नुकायल छैक; हम ओ नहि पढ़ि सकब।

अश्रु—अर्थात् अमंगल जे हेबाक छैक से हमरे ऊपर सँ कटि जाउक सैह ने चाहैत छी ? बेल, अहाँ सभक मंगल हो।

(चिट्ठी ल' कए निर्विकार भावें पढ़ैत अछि। पढ़ल भ' गेलाक बाद माथ उठा कए दुनू गोटे दिसि देखैत अछि।)

सीमा—की लिखल छैक एहि मे ?

(अश्रु मनोज दिसि देखैत छैक; देखि कए ठहाका मारि कए हँसै लगैत छैक। सीमो हँसैत छैक।)

सीमा—की भेल ? (अश्रु हँसैते रहैत छैक। मनोज ओकर हँसी सँ खौंझा जाइछ।)

मनोज—बताह जकाँ हँसैत कियैक छह ?

अश्रु—तोहर बतहपन देखि कए। (हँसैत अछि।)

मनोज—(सीमा सँ कहैत) आब अहाँ पढ़ू चिट्ठी।

सीमा—हम ?

(अश्रु क हँसी बन्द होइत छैक।)

मनोज—हँ ! (चिट्ठी दैत छैक।)

अश्रु—हम जाइत छी।

मनोज—(दरबज्जा बन्द करैत) परैबाक चेष्टा जुनि करह।

अश्रु—एहि सभक की माने ?

(सीमा चिट्ठी पढ़ैत अछि।)

मनोज—जे लिखल छैक सैह।

अश्रु—हमरा डर होइछ, तों पागल त नहि भ' गेल छह ?

मनोज—हम जा धरि लौटी नहि ता धरि एतहि रहिह। (मनोज जाइत अछि। सीमा चिट्ठी पढ़ि कए अश्रु दिस ताकैत अछि।)

सीमा—एहि सभक अर्थ की ?

अश्रु—(हँसि कए) हमहूँ सैह जानै जाहैत छी।

सीमा—हँसू; हँसब नहि ? एहि चिट्ठी मे अहाँक त कोनो हाथ नहि अछि ने ?

अश्रु—(अवाक भ' कए) सीमा देवी ! (फेर व्यथित भ' कए) छिः ! सीमा देवी, हमरा गलत जूनि बूझू !

सीमा—तखन हमरा ई सब कियैक लिखलन्हि अछि ? अहाँ सँ बियाह करबाक गप्प; गीता क माय हेबाक गप्प फेर कियैक उठलैक अछि ?

अश्रु—हम अपनहि किछु नहि बूझि रहल छी।

(सीमा बैसि कए चिट्ठी टुकड़ी-टुकड़ी करैत फेंकि दैत छैक।)

सीमा—ओह, हम कदाचित् पागल भ' जायब। सुनू, ओ हँसी त नहि क' रहल छथि ?

अश्रु—सैह हेतैक !

सीमा—कतय गेलाह ?

अश्रु—की जानै गेलियैक ?

सीमा—अद्भुत युवक छथि। बीच-बीच मे सीरियसो बात ल' कए एहन हँसी क' दैत छथि जे..............

अश्रु—किन्तु एके बात बेर-बेर कियैक उठैत अछि ?

सीमा—कोन बात ?

अश्रु—हमर दुर्बलता ल' कए अहाँ सभक एहन खेल कियैक छलै ?

सीमा—अहाँ की कहै चाहैत छियैक से हम नहि बूझि सकलहुँ !

अश्रु—नहि बुझबाक भान जुनि करु सीमा देवी ! अहाँ सब की चाहै छियैक से साफ-साफ कहू।

सीमा—(नहि समझैत) अश्रु बाबू !

अश्रु—धनी लोगक बालक जल्दी खराब भ' जायब। तैं कॉलेज मे पढ़ैत काले बियाह भ' गेल, किन्तु तखन पढ़बा मे एतेक व्यस्त छलियैक जे नव कनियाँ सँ प्रेम करबाक अथवा परस्पर कें जानबाक अवसर नहि भेंटल। ओहो आपन पढ़ाइ ल' कए नैहर मे व्यस्त छलीह। भेंटे कतेक देरक लेल होइत छल ? तकर बाद मृत्यु आबि कए हमरा दुनूक

बीच मे चिरविच्छेद क रेखा खींचि देलक। (उठि कए ठाढ़ भ' जाइछ। कनेक आगाँ बढ़ैत।) ओकर बहुत दिनक बाद अहाँ कें देखल। गीता कें पुछलियैक जे "कह त ककिनका ल' कए आयल छी ?" ओ बिना बुझनहि, झट सँ बाजल 'माय'। हम और अहाँ दुनू गोटे लजा गेलहुँ।

सीमा—ई सब गप्प आइ कियैक..............?

अश्रु—प्रयोजन छैक। हमर माइयो कें जा कए कहलकैक—"दादी, बाबूजी माइ कें आनलथिन्ह अछि।" माइ हड़बड़ा कए एलीह। सोचलन्हि जे हुनक बेटा नहि जानि की क' बैसल अछि। बाद मे बुझलन्हि जे अहाँ गीता कें पढ़ैबैक, किन्तु गीताक ओ एकटा गलती माय क मन मे—स्वीकार करैत छी जे हमरो मन मे—एकटा क्षीण आशाक संचार कैने छल। हम अहाँ सँ प्रेम कैलहुँ।

सीमा—अश्रु बाबू !

अश्रु—कहै दियह, बाधा जुनि दिअ। माइ सोचलन्हि जे ओ अपन पुतहु कें फेर पौलन्हि। वास्तव मे गीता के माय क बड़ प्रयोजन छलैक। और ओ जखन अपनहि मायक रूपें अहाँ कें स्वीकार कए लेलक तखन हम सोचलहुँ आब अवहेलना नहि चलत। सोचलहुँ एक गोट नारीक मन पर जय करब, किन्तु जाहि दिन जानलहुँ जे अहाँ मनोज सँ.........हम अपन गलती बुझलहुँ। माय कें कहलियैक जे सीमाक माय-बाप राजी नहि भेलथिन्ह। कोनो प्रकारे संवरण कैलहुँ। ओहि दिन सँ अहाँ मित्र-पत्नी क रूप मे हमरा मन मे प्रतिष्ठित भेलहुँ। हम ओकरहि सत्य मानि कए स्वीकार क' लेलहुँ। तखन कियैक ओहि दुर्बलता कें ल' कए—जे अज्ञान मे हम केलहुँ—बेर-बेर हँसी करैत जाइत छी ? एहि खेल सँ अहाँ सब कें की आनन्द भेंटैछ ? हमरा की आन कोनो रूप मे अहाँ सब नहि देखि सकैत छी ?—अहाँ सब लग की सदैव हास्यास्पद बनि कए रहब ?

सीमा-विश्वास करू, हम सब ओ सब किछु नहि चाहैत छी, नहि सोचैत छी।

अश्रु—तखन आजुक ई अभिनय कियैक ?

सीमा—दोहाइ अश्रु बाबू! हमरा गलत जूनि बुझू। हम किछु नहि जनैत छियैक......!

[मनोज क प्रवेश।]

सीमा—एहि चिट्ठी क अर्थ ?

अश्रु—हँ, हमहूँ जानै चाहैत छी एहि चिट्ठी क माने। आर यू जोकिंग विथ अस ?

मनोज—नहि, ई एकदम सत्य थीक।

सीमा—अहाँ की कहै चाहैत छी ?

मनोज—अश्रु क बगल मे अहाँ हमरा सँ बेसी शोभब।

सीमा—प्रत्येक रहस्यक एकटा सीमा होइत छैक, मनोज!

मनोज—रहस्य नहि सीमा; हमर अनुरोध थीक। अश्रु कें वरण करू, अहाँ सुखी हैब।

[सीमा स्तंभित भ' कए देखैत अछि।]

अश्रु—हठात् एहन एकटा विचित्र कल्पना, तोरा मन मे कियैक ऐलह, से जानि सकैत छी ?

मनोज—विचित्र नहि अश्रु; ई हमर विश्वास थीक। हमरा की अछि; जाहि ल' कए हम हुनका सुखी बनैबन्हि। विद्या, अर्थ किछु नहि अछि; ने एकटा पैघ काज अछि।

अश्रु—तोरा प्रेम छह; ओही सँ तों हिनका सुखी बनेबहक।

मनोज—ओ प्रेम नहि रहतैक अश्रु! अभाव क ताड़ना सँ समस्त प्रेम, समस्त अनुराग दुइये दिन मे सुखा जेतैक। तखन जे दरारि ऐतैक तकरा क्यो नहि रोकि सकतैक—हमहूँ नहि; सीमो नहि! ओहि सँ इयैह नीक छैक। एखनहुँ समय छैक।

अश्रु—ओ सब हेतैक से पहिनहि सँ तों कियैक सोचैत छह ? तों सब परस्पर प्रेम करैत छह; तोरा सब मे की एतबहु विश्वास नहि अछि ? तोरा सब मे की एतबहु शक्ति नहि जे दूरत्व ऐतैक त आबै नहि देबहक।

मनोज—जे विश्वास एखन अछि ओकरा कर्म-क्षेत्र मे प्रवेश क' कए नहि देखला उत्तर और क्षति हैत अश्रु। प्रेम एक कविता थीक; ओ

छन्द क पतन नहि सहि सकैछ। ओ अतीव सुन्दर वस्तु थिक। ओकरा सुरक रँग सँ रंगला उत्तर गीत क अविरल मन्दाकिनी स्वयं बहै लगैछ—ओ अस्पष्टता मे नहि रहै चाहैत अछि।

सीमा—हमरा सँ की अहाँ क विश्वास उठि गेल अछि ?

मनोज—ओ अवान्तर प्रसंग थीक।

सीमा—नहि, हमर प्रश्न क उत्तर दियह।

मनोज—जौं बाद मे उठि जाय।

सीमा—बाद मे उठतैक ? ओहि अनिश्चित कें आइ अहाँ पैघ क' कए कियैक देखि रहल छी ? हमरा सभक एतेक दिनक हेम-क्षेम, वचन देनाइ, प्रतीक्षा करनाइ ओ सब आइ तुच्छ कियैक भ' गेल छैक ?

मनोज—हम एतेक नहि कहि सकब। तखन हँ, हमर दावी वा अनुरोध जे बुझीह—अहाँ दुनू गोटे लग अछि; अहाँ सब परस्पर कें ग्रहण करू।

अश्रु—मनोज !

मनोज—विश्वास करह अश्रु; विश्वास करू सीमा; हम एको रत्ती दुःखी नहि हैब। हम हँसैत-हँसैत सब ग्रहण करब।

सीमा—अहाँ कें दुःख नहि हैत ?

मनोज—नहि !

सीमा—तखन की अहाँ हमरा सँ प्रेम नहि करैत छी ? कहियो प्रेम नहि कैलहुँ ?

मनोज—अहाँ की हमरा सँ प्रेम केने छी ?

सीमा—की बाजि रहल छी अहाँ ?

मनोज—हँ ठीके कहि रहल छी। हमरा सभक प्रेम कोनो आकर्षण क ऊपर आधारित नहि छल सीमा। तैं दूर हँटि गेला सँ हमरा सब मे ककरो दुःख नहि हेतैक।

सीमा—एहि सब बात क कारण की; हम जानि सकैत छी ?

मनोज—हँ।

सीमा—सब किछु जखन कहिये रहल छी तखन ओहो कहि दियह।

मनोज—अहाँ आत्म-रक्षा क लेळ हमरा सँ प्रेम करैत छी, इयैह फूसि गप्प क प्रचार केने छलियैक।

सीमा—ओ त हम स्वीकार करैत छी, किन्तु ओकर बादो की ओ सब मिथ्ये छैक ?

मनोज—हँ, मिथ्या छैक।

सीमा—मनोज !

मनोज—ओकर बाद अहाँ प्रेम क भान कैलहुँ; कारण जे अहाँ जनैत छलियैक जे जतेक दिन हमरा सँ युक्त रहब ततेक दिन अश्रु वाला ओतेक पैघ ट्यूशन नहि छुटत।

अश्रु—सीमादेवी पर तों अविचार क' रहल छह, मनोज !

मनोज—ओकर बाद अश्रु क मारफतें अहाँ कें ओतेक पैघ काज भेटल। तखन आपन परिवार क लोग कें सुखी रखबा लेळ हमरा सँ संबंध राखब और बेसी प्रयोजनीय भ' गेल—एहि बेर अहाँ सत्ये प्रेम कैलहुँ। हम दुनू गोटे प्रम क अभिनय करैत-करैत साँचे एहि कुत्सित आगि मे जरै लागलहुँ, जे मात्र शरीरेटा कें नहि; मनो कें झरका कए क्षत-विक्षत क' देछ।

सीमा—हमरो सबंध मे तखन अहाँ क इयैह धारणा अछि ? एतबा दिन सँ एहि बात कें अहाँ अपना मन मे पोसि कए रखने छी ? जहिया अहाँ हमरा सँ प्रेम कैलहुँ, प्रेमालाप कैलहुँ तहिया अहाँ क आँखि मे हमरा प्रति घृणा और अविश्वास क भाव छल। ओह ! हे भगवान !!

[ओछाओन पर ओंघरा कए हकन्न कानै लगैछ।]

अश्रु—सीमादेवी ! मनोज ! तों शायद भूल क' रहल छह। एहि तरहें आघात नहि देबाक चाही। यू आर क्रूएल; टू क्रूएल ! प्लीज मनोज, आपन बात विथड्रॉ करह। तों दुनू परस्पर कें ग्रहण क' कए सुखी होबह—बाजह हमरा की करै पड़त ? तोरा सभक सुखक लेल हम सब किछु क' सकैत छी। हमरा कारणें तोरा सभक मन मे जौं कोनो प्रकार क द्विधा रहन्हु त हम तोहर मित्र थिकहुँ; हमरा

पर विश्वास करह। कोनो प्रकारक अमर्यादा हम अपना समक बन्धुत्व मे नहि आबै देवैक—तोरा लेल हम सब क' सकैत छी आइ कैन डू आल एण्ड ऐवरीथिंग फॉर योर सेक। बाजह, बाजह मनोज। हम हटि जायब.........।

मनोज—नहि, तों सीमा सँ बियाह करह.........।

अश्रु—मनोज !!

मनोज—हँ, एहि सँ हम सुखी हैब।

अश्रु—एही मे तों सुखी हैबह ?

मनोज—हँ !

[हठात् अश्रु क आँखि क्रोधाग्नि सँ जलि उठैत छैक। ओ मनोज क कॉलर पकड़ि कए बजैत अछि।]

अश्रु—रस्केल ! तखन कियैक एकटा कन्या क जीवन सँ खेल खेललह ? एतेक दिन सँ मीठ-मीठ प्रेम क गप्प कहि कए कियैक भरमैलह...?

मनोज—[अवाक भ' कए] अश्रु !

अश्रु—[लज्जित भ' कए मनोज क कॉलर छोड़ि दैत छैक।] हमरा...... हमरा क्षमा करह मनोज! किन्तु तोहर पैर पकड़ैत छियह, एहन अन्याय जुनि करह। वैह देखह, जे तोरा बिछाओन पर कलपि-कलपि कए कानि रहल छथि। हुनका मे तों कनेको बनावट अथवा अभिनय देखि रहल छह ? हुनका मे की तोहर प्रेम नहि छैक ? बाजह मनोज, उत्तर दे।

मनोज—[मनोज चीत्कार करैत] किन्तु अहाँ सब कियैक ने हमर बात बुझैत छी ? सीमा क जीवन कें नष्ट करबा क हमरा एको रत्ती अधिकार नहि अछि। प्रेम केनाइ और प्रेम क' कए बियाह केनाइ हमरा लेल अन्याय थीक। हमरा जे किछुओ नहि अछि।

अश्रु—तोरा सब छह। तोहर सीमा छह, तों छह और तोरा हृदय मे छह प्रेम.........!

मनोज—आह ! स्टॉप-स्टॉप, थमह-थमह। हमरा हृदय मे किछु नहि अछि। सब चालनि भ' गेल अछि। प्रेम नहि छैक; छैक कीड़ा।

देखबह ? देखै चाहैत छह ? [मनोज एक्सरे क प्लेट ल' कए अश्रु दिस फेकि दैछ ।] ले, देखह ।

अश्रु—[नहि बुझैत ।] ओ की थीक ?

मनोज—मनुष्य आपन स्मृति-चिह्न क लेल फोटो खिचबैत अछि; सैह फोटो थीक—हमर हृदय क फोटो । नीक जकाँ देखह । ओहिठाम प्रेम नहि छैक—छैक किछु कीड़ा ।

[सीमा उठि कए बैसैत अछि ।]

अश्रु—तोहर.........तोहर.........।

मनोज—हँ, किछु काल पहिने कहने छलह ने—आइ एम ए पेशेंट आफ लुनेटिसिज्म । नीक जकाँ देखह—आइ एम ए पेशेंट आफ ट्यूबरक्लोसिस [हम यक्ष्मा क रोगी छी ।] !.........

सीमा—तैं......तैं अहाँ हँटै चाहैत छी ?

मनोज—हँ सीमा ! जे रोग हमरा हृदय मे घर बान्हने अछि ओकरा हम अहाँ मे फैला देमै नहि चाहैत छी ।

सीमा—की औ, अहाँ कोना सोचि लेलहुँ जे अहाँ अस्वस्थ छी त हम दूर हँटि जायब ? एखन त हमरा अहाँ क बेसी प्रयोजन अछि ।

मनोज—नहि सीमा, ओ नहि भ सकैत अछि । सब किछु जानला क बाद आब नैनपन जूनि करू ।

अश्रु—एहि रोग मे त आब एतेक डरबाक किछु नहि छैक । मनोज, तों स्वस्थ भ' जैबह । हम तोरा स्वस्थ क' कए छोड़बह और ओ अधिकार हमरा अछि ।

मनोज—से अछि । किन्तु सीमा क जीवन कियैक बरबाद करबैक ?

अश्रु—बियाह एखन नहि हैतैक । तों नीक भ' जाह तकर बाद.........।

मनोज—अर्थात् एक बालिका अपन दायित्व-पालन करबा लेल सदैव तिल-तिल क' कए अपना कें विलीन क' देतैक । अपन समस्त आशा-आकांक्षा कें सर्वदा क लेल विसर्जित क' देतैक । नो-नो इट कान्ट बी—ई नहि होइत छैक; नहि भ' सकैत अछि ।

सीमा—खूब होइत छैक; खूब भ' सकैत अछि ।

मनोज—और अपना कें कतेक वंचित करब, सीमा ?

सीमा—हम त वंचित नहि भ' रहल छी। हम त सब पाबि रहल छी, अहाँ कें पाबि रहल छी। एहि सँ पैघ माँगनाइ और हमरा लेल आन किछु नहि भ' सकैछ।

मनोज—अहाँ अपन परिवार क दायित्व-पालन करबा क लेल तहिया अश्रु सन व्यक्ति क आग्रह कें अस्वीकार कैलियैक। अपन सुख कें नहि देखलियैक—भाय-बहिन, माय-बाप क लेल हमरा सन अभागल सँ प्रेम क अभिनय कैलहुँ। आइ पुनः हमर दायित्व-बोध सँ अहाँ अपना पर अत्याचार करबैक; से हम नहि होमै देब।

सीमा—मनोज.........!

मनोज—अहाँ क परिवार स्वार्थी जकाँ अहाँ क समस्त रस चूसि कए अहाँ दिस सँ उदासीन भ' सकैत अछि; किन्तु हम से नहि क' सकैत छी। हम जे अहाँ सँ प्रेम करैत छी; सीमा! हम अहाँ क क्षति कोनो तरहें नहि क' सकैत छी—नहि-नहि, हम नहि क' सकैत छी।

सीमा—किन्तु अहाँ कें के कहलक जे हमर क्षति हैत ? और केहन क्षति ?

मनोज—मानसिक क्षति। अहूँ कें त आन-आन युवती सब जकाँ घर-संसार बसैबा क साध होइत हैत ?

सीमा—अहीं कें ल' कए त हमर घर-संसार अछि।

मनोज—अहूँ कें त बियाह क' कए पति क सुखें सुखी हैबाक अधिकार अछि।

सीमा—ओ अधिकार त अहीं थिकहुँ।

मनोज—अहाँ कें की माय बनबाक इच्छा नहि होइत अछि ?

सीमा—माय हैबाक इच्छे त हमरा सभक नारीत्व थीक।

मनोज—किन्तु निश्चित रूपें ई नहि चाहैत हैब जे ओ सन्तान रुग्ण होउक, अस्वस्थ होउक ?

सीमा—मनोज!

मनोज—[जोर द' कए बजैत अछि।] कोनो गैरेंटी द' सकैत छह अश्रु ? तोहर कोनो डाक्टर गैरेंटी द' सकैत छथन्ह जे हमरा पूर्ण स्वस्थ

क' देताह ? हमर रोग क एकोटा जीवाणु हमर सन्तान क शरीर मे प्रवेश नहि करत ? बाजह; उत्तर दे.........।

अश्रु—हँ, द' सकैत छी। आइ-कालिह ई रोग त कोनो समस्ये नहि थीक। तों हमरा पर सब किछु छोड़ि दे।

मनोज—स्वीकार कैलहुँ तोहर बात, किन्तु हमर मन ? हमर मन की मानत ? हम की स्वस्थ मने सोचि सकब जे हम नीरोग छी ? तखन जानि-बुझि कए कियैक हम अपन स्त्री आ' अपन सन्तानक जीवन नष्ट क' दियैक ? जवाब दे अश्रु !

[सब निरुत्तर रहैत छैक। किछु काल क बाद मनोज हँसैत अछि।]

मनोज—हम बुझैत छियैक एकर कोनो उत्तर नहि छैक। सीमा !

[सीमा देखैत छैक ।]

मनोज—हम जानैत छियैक सीमा, हमर त्याग करबा मे अहाँ कें कष्ट हैत, किन्तु हमरा सब कें अपन अग्रिम भविष्य क दिस ताकि कए अपना लेल एहि कष्ट कें स्वीकार करै पड़त। अहाँ राजी होउ सीमा ! अहाँ हमरा सँ बियाह नहि क' कए, हमरा नहि पेलहुँ तँ आन ककरो सँ बियाह नहि क' कए जे कर्त्तव्य-पालन करब ताहि सब सँ हम आनन्दित नहि हैब। प्रेम एकटा कर्त्तव्य नहि थिकैक सीमा, ई थिकैक जीवन क जिज्ञासा ! जीवन कें जानू; कर्त्तव्य क दोहाइ द' कए ओकर हत्या जुनि करू।

सीमा—हम किछु नहि जनैत छी, अही कहू हम की करी ?

मनोज—अहाँ अश्रु सँ बियाह करू।

सीमा—[आँखि मे नोर भरि कए] तखन अहाँ सुखी हैब ?

मनोज—ओ हमर परम सुख हैत—हमर सब सँ पैघ आनन्द। और ककरहु घर मे गेला सँ हमरा ओ सुख, ओ आनन्द नहि हैत।
[सीमा कोनो जवाब नहि दैत छैक।] सीमा अहाँ कें पौने छलहुँ, अहाँ हमरा सँ प्रेम कैने छलहुँ, ई हमर गौरव थीक। जतबो दिन अहाँ हमर छलहुँ वेह हमरा लेल अक्षय थीक—एहि सँ बेसी हमरा

और किछु नहि चाही।

—अश्रु।

अश्रु—बाजह।

मनोज—तों हमर सीमा कें ग्रहण क' कए हुनक समस्त व्यथा, हुनक दुःख मेटा नहि सकबह ?

अश्रु—मनोज !

मनोज—रौ, हम भगवान सँ प्रार्थना करैत छी जे तों सब सुखी हो। हम जनैत छी जे तों सब सुखी हैबह—तों सब घर बसैबह—सुखक घर। ओहि मे गीता रहतैक और ऐतेक एकटा शिशु; ओकर किलकारी सँ तों सब मत्त भ' जैबह। ओ तोरा सभ कें अकच्छ करतह। मातृत्व सँ सीमा क हृदय उत्फुल्ल भ' जेतैक।

अश्रु—मनोज !

मनोज—[हँसैत अछि।] दिन क काज समाप्त क' कए तों जखन क्लान्त भेल डेरा ऐबह तखन सीमा तोहर प्रतीक्षा करैत खिड़की लग ठाढ़ भेटतह। दुनू एक दोसरा कें देखबह, हँसबह, सीमा दौड़ि कए जैतीह और दरवज्जा खोलि कए पुछतीह 'एतेत देर कियैक भेल ?' तों हँसबह। और तखन फूल सन सीमा दिस बढ़ा देबहक ताजा फूल क एकटा गुच्छा। तकर बाद दुनू गोटे हाथ मे हाथ द' कए ऊपर चलि जैबह। तखन ऊपर मे विहुँसि उठतह तोरा सभक फूल क संसार.........।

अश्रु—ई सब त थिकह तोहर स्वप्न मनोज, ई भेलह तोहर रचित कविता।

मनोज—हमर स्वप्न, हमर कविता तोरा सब कें घेरि कए रहतह अश्रु ! तों सब फूल—ताजा फूल क मेला सँ एहि बासी झड़ल फूल कें मुक्ति दे अश्रु !!

अश्रु—और तों...... ..।

मनोज—हम ?

अश्रु—हँ; हँ; तों—तों की करबह ?

मनोज—तखन हम रहब बहुत दूर.........कतहु।

अश्रु—मनोज !

मनोज—भरिसक ठीक ओही समय एकटा कोनो सेनिटोरियम क निराला घर क एकाकीपन मे हठात् तोरा सभक गप्प मन पड़त। दूर ओहि नील आकाश क श्वेत मेघ क नाद पर चढ़ि कए हमर मन भासैत-भासैत तोरा सब लग चलि जायत—तोरा सभक सुख-नीड़ मे। अथवा भरिसक ओहि समय हम एहि संसार मे नहि रहब, तइयो हम आयब; हम चुपचाप हुलकि कए देखि आयब—तों दुनू नीके छह—तों दुनू नीके छह—तों दुनू सुखी छह; तों सब प्रेम क' कए रचना कैने छह एक कविता—जकर नाम छैक प्रेम। और हम किछु नहि चाहैत छी—और किछु नहि चाहैत छी। एहि सँ बेसी हम किछु नहि चाहैत छी !

(पर्दा खसैत छैक।)

———

मैथिली क बहु प्रशंसित प्रकाशन

कवयो वदन्ति—(काव्य) नचिकेता	२.००
चोर—(नाटक) अनुवादक, प्रो० प्रबोध नारायण सिंह	१.००
हरिमोहन झा : व्यक्तित्व और कृतित्व—डा० प्रेमशंकर सिंह	६.००
विष-वृक्ष—अनुवादिका, प्रो० इला रानी सिंह	२.००
सलोमा— " " "	०.७५
प्रेम : एक कविता—" " "	०.७५
हाथी क दाँत—(नाटक) प्रो० प्रबोध नारायण सिंह...	०.५०
अन्हेर नगरी—(नाटिका) अनुवादक " "	०.५०
सोहर और खेलौना—डा० अणिमा सिंह	१.५०
कोहबर— " " "	१.००
समदाउन और उदासी— " "	१.००
शिशु गीत और खेल— " "	०.६०
स्वर्णिम छाया-(उपन्यास) अनुवादिका डा० अणिमा सिंह	२.५०
मैथिली लोक-गीत—डा० प्रो० अणिमा सिंह	१५.००

प्राप्ति स्थान : —

लोक साहित्य परिषद, १६२/८०, लेक गार्डेन्स,कलकत्ता-४५



प्रोफेसर इला रानी सिंह

पद :

प्राध्यापिका, सेठ सूरजमल जालान गर्ल्स कालेज।

शिक्षा :

आरम्भिक—सहर्षा (सहसौरा, बाराही)।
एडमीशन—बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय।
आइ० ए०—कलकत्ता विश्वविद्यालय।
बी० ए० (प्रतिष्ठा)—भागलपुर विश्वविद्यालय।
एम० ए० (हिन्दी)—सागर विश्वविद्यालय।
एम० ए० (मैथिली)—बिहार विश्वविद्यालय।

विशेष अध्ययन :

मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, भाषा-विज्ञान एवं लोक-साहित्य।

प्रकाशित कृति :

सलोमा (१९६५ ई०; ऑस्कर वाइल्ड क फ्रेंच नाटक क अनुवाद)।
प्रेम एक कविता (१९६८ ई०; बंगला नाटक क अनुवाद)।
विष-वृक्ष (१९६८ई०, बंकिम चन्द्र चटर्जी क बंगला उपन्यास क अनुवाद)।
विन्दन्ती (स्व-रचित मैथिली कविता-संकलन) [प्रेस मे]
रयि (स्व-रचित हिन्दी कविता-संकलन) [प्रेस मे]

पता :

द्वारा प्रोफेसर डा० प्रेमशंकर सिंह, एम० ए० (द्वय), पीएच० डी०,
प्रोफेसर्स हास्टल, आशानन्दपुर, भागलपुर।